

खरी मजूरी चोखा काम	= ईमानदारी से अच्छा काम करने से पारिश्रमिक भी अच्छा मिलता है।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे	= अपमानित व्यक्ति दूसरों को दोष देता है।
खोदा पहाड़ निकली चुहिया	= बहुत अधिक परिश्रम करने पर भी अल्प लाभ की स्थिति।
गरीब की जोरु, सबकी भाभी	= गरीब या कमजोर व्यक्ति से सब लोग अनुचित लाभ उठाते हैं।
गुरु से कपट, मित्र से चोरी, या हो अंधा या हो कोढ़ी	= गुरु से कपट और मित्र से चोरी करने का बुरा फल मिलता ही है। अतः, ये दोष सर्वथा त्याज्य हैं।
गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है	= दोषी व्यक्ति की संगति में निर्दोष भी कष्ट पाता ही है।
घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध	= बहुत योग्य व्यक्ति को भी परिचितों के बीच उतना सम्मान नहीं मिलता जितना अपरिचित अयोग्य को मिलता है।
घर का भेदी लंका ढाए	= आपसी फूट से घर, परिवार समाज या राष्ट्र का विनाश हो जाता है।
घर की मुर्गी दाल बराबर	= सुगमता से प्राप्त वस्तु को उतना महत्व नहीं मिलता।
घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने	= घर में अभाव होने पर भी संपन्नता का झूठा दिखावा करना।
घोड़ा घास से यारी करेगा, तो खायेगा क्या?	= यदि कोई अपने कामधंधे में लाभ नहीं कमायेगा तो कामधंधा नहीं चल सकता अथवा मजदूरी प्राप्त किये बिना जीवन निर्वाह नहीं हो सकता।
चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए	= कंजूस व्यक्ति शारीरिक कष्ट स्वीकार करता है पर खर्च नहीं करना चाहता।
चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात	= यौवन, सौंदर्य, सत्ता, वैभव, धन आदि कभी स्थायी नहीं होते।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता	= निर्लज्ज या बेशर्म व्यक्ति पर समझाने, डाँटने, मारने-पीटने इत्यादि का भी कोई असर नहीं पड़ता।
चिराग तले अँधेरा	= न्यायप्रिय, धार्मिक, विचारवान, व्यक्ति के आसपास या परिवार में अनुचित व अमर्यादित घटनाओं का होना।